



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 576]

नई दिल्ली, मंगलवार, दिसम्बर 3, 1985/अग्रहायण 12, 1907

No. 576]

NEW DELHI, TUESDAY, DECEMBER 3, 1985/AGRAHAYANA 12, 1907

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके ।

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

उद्योग मंत्रालय

(औद्योगिक विकास विभाग)

नई दिल्ली, 3 दिसम्बर, 1985

प्रादेश

का.आ. 878(अ)/18चक/18कक/आई.डी.आर. ७/85.—केन्द्रीय सरकार ने, भारत सरकार के भूतपूर्व औद्योगिक विकास मंत्रालय के आदेशों का. आ. 128(अ)/18चक/18कक/आई.डी.आर. ७/73, तारीख 5 मार्च, 1973 द्वारा व्यक्तियों के निकाय को (जिसे इसमें इसके पश्चात् प्राधिकृत व्यक्ति कहा गया है) सौम्य कृपा मित्रिकेट एंड स्लाय वर्क्स लिमिटेड, कलकत्ता नामक औद्योगिक उपक्रम का सम्पूर्ण प्रबन्ध 5 मार्च 1973 से पांच वर्ष की अवधि के लिए ग्रहण करने के लिए प्राधिकृत किया था;

और भारत सरकार के उद्योग मंत्रालय (औद्योगिक विकास विभाग) के आदेशों द्वारा उक्त आदेश की अवधि समय समय पर 4 दिसम्बर, 1985 तक, जिसके अंतर्गत यह तारीख भी सम्मिलित है, को अंतर अवधि के लिए बढ़ा दी गई थी।

और केन्द्रीय सरकार ने, अपनी यह राय होने पर कि सर्वसाधारण के हित में यह समीचीन है कि प्राधिकृत व्यक्ति औद्योगिक उपक्रम का प्रबन्ध करना जारी रखे उद्योग (विकास और विनियमन) अधिनियम 1951 (1951 का 65) का धारा 18 चक की उपधारा (2) के परन्तुक के अन्तर्गत एक आवेदन कलकत्ता उच्च न्यायालय को किया था, जिसमें यह प्रार्थना की गई थी कि ऐसा प्रबन्ध तारीख 4 जून, 1986 तक की ओर अवधि के लिए जारी रखा जाए।

और इस उच्च न्यायालय ने अपने तारीख 28 नवम्बर, 1985 के आदेशानुसार प्राधिकृत व्यक्ति का उक्त औद्योगिक उपक्रम का प्रबन्ध 4 जून, 1986 तक का अंतर अवधि तक जारी रखने के लिए अनुज्ञात कर दिया था।

अतः केन्द्रीय सरकार, उक्त अधिनियम की धारा 18चक के साथ पठित धारा 18चक की उपधारा (2) के परन्तुक द्वारा पदस्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए प्राधिकृत व्यक्ति का निवेदन देता है कि वह आदेश तारीख 5 दिसम्बर, 1985 से 4 जून, 1986 तक की ओर अवधि के लिए उक्त औद्योगिक उपक्रम का प्रबन्ध करना जारी रखे।

[फाइल सं. 2 (1)/80- सांयूएस]
ए. पी. मखन, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF INDUSTRY

(Department of Industrial Development)

New Delhi, the 3rd December, 1985

ORDER

S.O. 878(E), 18FA 18AA IDRA 85. —Whereas by the Order of the Government of India in the late Ministry of Industrial Development No. S.O. 12541/18A 18AA, IDRA 73, dated the 5th March, 1985, the Central Government had authorised a person (hereinafter referred to as the authorised person) to take over the management of the whole of the industrial undertaking known as Messers Krishna Silicate and Glass Works Limited, Calcutta, for a period of five years from the 5th March, 1973

And whereas the duration of the said Order was extended from time to time by the Orders of the Government of India in the Ministry of Industry (Department of Industrial Development) for a further period upto and inclusive of 4th December, 1985.

And whereas the Central Government, being of the opinion that it was expedient in the interest of

general public that the authorised person should continue to manage the said industrial undertaking, made an application under the proviso to sub-section (2) of section 18FA of the Industries (Development and Regulation) Act, 1951 (65 of 1951), to the Calcutta High Court praying for the continuance of such management for a further period upto 4th June, 1986.

And, whereas the said High Court by its Order dated the 28th November, 1985 permitted the authorised person to continue to manage the said industrial undertaking for a further period upto 4th June, 1986.

And, now in exercise of the powers conferred by the proviso to sub-section (2) of section 18FA, read with section 18AA, of the said Act, the Central Government hereby directs the authorised person to continue to manage the said industrial undertaking for a further period from 5th December, 1985 to 4th June, 1986.

[F. No. 2(1) 80-CUS]
A. P. SARWAN, Jt. Secy.